डाइट के संयुक्त अधिवेशन में प्रधानमंत्री का भाषण

14 दिसम्बर 2006
टोक्यो

मुझे इस सम्मानीय सदन को सम्बोधित करने का अद्वितीय अवसर देकर आपने मुझे जो सम्मान दिया है, मैं उसके लिए दिल से आभारी हूँ। यह दोनों देशों के लोगों के बीच दोस्ती और एक दूसरे के लिए सद्भावना का प्रतीक है। मैं भारत की संसद, सरकार और लोगों की तरफ से आप सभी को बधाई देता हूँ।

महामहिम, देवियो और सज्जनो,

जापान और भारत सभ्य पड़ोसी देश है। बौद्ध धर्म की साझी विरासत दोनों देशों को प्राचीन काल से जोड़ती आई है। यदि दोनों देशों के इतिहास पर नजर डालें तो परस्पर सम्पर्क के जरिए दोनों देशों की संस्कृतियां समृद्ध हुई हैं। आज से एक हजार साल पहले भारतीय भिक्षु, बोधिसेना तोदाइजी मठ में दाइबुत्सु के अभिषेक में शामिल होने के लिए नारा आए थे। हाल ही के समय में टैगोर और ओकाकुरा तेन्शिन ने दो महान एशियाई राष्ट्रों के बीच समझबूझ का नया सेतु तैयार किया था।

मेइजी की पुनर्बहाली के बाद से विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में प्रगति के आधार पर जापान के आधुनिकीकरण और दूसरे विश्व युद्ध के बाद जिस ऊर्जा और उत्साह से जापान ने प्रगति की उसका हमारे प्रथम प्रधानमंत्री, पं0 जवाहर लाल नेहरू पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे चाहते थे कि भारत और जापान के बीच नजदीकी रिश्ते बनें तथा भारत-जापान के अनुभवों से शिक्षा ले।

प्रधानमंत्री किशी के प्रयासों से भारत जापान से विदेशी विकास सहायता (ओडीए) प्राप्त करने वाला पहला राष्ट्र बना। आज भारत जापान से सबसे ज्यादा विदेशी विकास सहायता प्राप्त करने वाला राष्ट्र है और हम इस बहु-मूल्य सहायता के लिए जापान की सरकार और यहां के लोगों के आभारी हैं।

मोटर वाहन तथा पेट्रो-रसायन जैसे भारतीय उद्योगों के विकास में जापानी उद्योगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 90 के दशक की शुरूआत में जब भारत गहन आर्थिक संकट से गुजर रहा था, तब जापान ने भारत को निरन्तर सहायता और समर्थन दिया।

वहीं, भारत ने 1952 में जापान के साथ एक अलग से शान्ति संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसमें जापान के खिलाफ सभी युद्ध दावों को माफ कर दिया गया था। युद्ध के बाद न्यायमूर्ति राधा विनोद पाल के नीतिगत फैसलों को आज भी जापान में याद किया जाता है।

ये घटनाएं हमारी दोस्ती और इस तथ्य की परिचायक हैं कि दोनों देशों ने इतिहास की संकटमय घड़ियों में एक दूसरे का साथ दिया।

मैं जब भी जापान आता हूँ, आपकी प्रगति से काफी प्रेरित होता हूँ और आपकी सहृदयता से काफी प्रभावित होता हूँ। मैं 1992 की अपनी जापान यात्रा को कभी नहीं भूलूंगा। भारत के वित्त मंत्री के रूप में यह मेरी पहली द्विपक्षीय यात्रा थी।

मैं उस समय 1991 के गम्भीर आर्थिक संकट के दौरान जापान की मदद के लिए उसका आभार व्यक्त करने के वास्ते यहां आया था। 1991 के इस आर्थिक संकट ने हमें पुराने ढर्रों को तोड़ने और खुली अर्थव्यवस्था के जरिए प्रगति के एक ऐसे नए मार्ग पर अग्रसर होने का अवसर प्रदान किया, जिसमें हम वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा के काबिल बन सके। हमने क्षमता और समर्पण के मूल्य सीखने तथा विपरीत परिस्थितियों को अवसरों में बदलने के तौर-तरीके जानने के लिए जापान का सहारा लिया।

आज, एक नए भारत के प्रधानमंत्री के रूप में, मैं जापान लौटा हूँ। पिछले 15 वर्षों में हमारी अर्थव्यवस्था 6 प्रतिशत वार्षिक की औसत दर से विकास की ओर अग्रसर रही है। हाल के वर्षों में इसमें और तेजी आई है तथा विकास की दर 8 प्रतिशत वार्षिक से ऊपर पहुंच गई है। भारत की निवेश दर अब हमारे सकल घरेलू उत्पाद की 30 प्रतिशत हो गई है। 1990 की शुरूआत में हमारी सरकार द्वारा शुरू किए गए व्यापक आर्थिक

सुधारों के फलस्वरूप भारत की अर्थव्यवस्था अब आर्थिक वैश्वीकरण और बहु-ध्रुवीय विश्व के उदय से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों को स्वीकार करने में सक्षम बन गई है।

खुले समाज और खुली अर्थव्यवस्था के रूप में भारत प्रगति की ओर अग्रसर है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के ढांचे के अन्तर्गत देश के बदलाव के हमारे प्रयासों की सफलता एशिया तथा दुनिया में शान्ति व प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानव के इतिहास में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि जब एक बहुलवादी कार्यरत लोकतंत्र के ढांचे के अन्तर्गत एक अरब से ज्यादा लोगों ने गरीबी समाप्त करने और अपने समाज तथा अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने के ऐसे प्रयास किए हों।

हमारा मानना है कि भारत अब उच्च विकास के स्थायी रास्ते पर चल निकला है। हमने वैश्विक अर्थव्यवस्था से सेवा-संचालित तथा प्रौद्योगिकि-संचालित जुड़ाव के लिए एक नया मॉडल विकसित किया है। भारत आज, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और औषधि जैसे ज्ञान आधारित क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले देश के रूप मे उभरा है। देश में सड़क, रेलवे, दूरसंचार और बन्दरगाह जैसे प्रत्यक्ष तथा सामाजिक बुनियादी ढांचों के विस्तार तथा आधुनिकीकरण में विशाल निवेश हो रहा है। इनसे देश के विनिर्माण क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा और कुशलता में काफी वृद्धि होगी।

मेरा मानना है कि इन घटनाक्रमों और बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य ने एक ऐसी नींव रखी है, जिस पर दोनों देश परस्पर रिश्तों को तेजी से विकसित कर सकते हैं। मेरा मानना है कि अब वह समय आ गया है, जब हमारी दो प्राचीन सभ्यताएं सामरिक तथा वैश्विक साझीदारी में मजबूत समसामयिक संबंध स्थापित करें। इसका एशिया और कुल मिलाकर पूरी दुनिया पर काफी प्रभाव पड़ेगा।

भारत और जापान एशिया के ऐसे दो प्रमुख देश हैं, जो स्वतंत्रता, लोकतंत्र, मूलभूत मानव अधिकारों के सम्मान और कानून के शासन के प्रति कटिबद्धता के मूल्यों का समान रूप से सम्मान करते हैं। हमें इन साझा मूल्यों और दोनों देशों के बीच व्यापक आर्थिक आदान-प्रदान का फायदा उठाकर सर्वाधिक परस्पर महत्व की मजबूत साझेदारी का निर्माण करना चाहिए।

दोनों देशों का यह भी मानना है कि भारत और जापान को उभरते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अपनी सही तथा अनुकूल भूमिका निभानी चाहिए। भारत और जापान के बीच मजबूत रिश्ते एक खुले तथा सर्वनिहित एशिया और एशियाई क्षेत्र तथा विश्व में शान्ति और स्थिरता बढ़ाने के कारण बनेंगे।

आर्थिक रिश्ते हमारे संबंधों का मजबूत आधार बनना चाहिए और इस क्षेत्र में जोरदार प्रयासों की जरूरत है। हमारे व्यापार और निवेश संबंध क्षमता से काफी नीचे हैं। इसे बदला जाना चाहिए। इसके विपरीत भारत का चीन तथा कोरिया के साथ व्यापार काफी तेजी से बढ़ा है और पिछले वर्ष दोनों देशों के बीच यह व्यापार 40% के आसपास रहा। चीन का भारत के साथ व्यापार भारत के जापान के साथ व्यापार का तीन गुना है और कोरिया का भारत के साथ व्यापार लगभग जापान के भारत के साथ व्यापार के बराबर है।

इसीलिए मैंने कहा है कि इसमें बदलाव आना चाहिए। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग की पूर्ण क्षमताओं के दोहन के लिए हमारी सरकारों, कारोबारियों और उद्योगों को ठोस प्रयास करने होंगे।

मेरा मानना है कि भविष्य में ज्ञान अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में दोनों देश साझेदारी कायम कर सकते हैं। हमारी अर्थव्यवस्था का ढांचा, तुलनात्मक लाभप्रद स्थिति और हमारी जनसंख्या का ब्यौरा इस क्षेत्र में सहयोग के मजबूत कारण हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में परस्पर सहयोग को गति प्रदान करने की जरूरत है। सूक्ष्म प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भविष्य में परस्पर सहयोग की काफी संभावनाएं हैं। हमें भारतीय सॉफ्टवेयर और जापानी हार्डवेयर उद्योग के बीच तालमेल बढ़ाना चाहिए।

विचारों में साझीदारी के लिए लोगों के बीच परस्पर सम्पर्क बढ़ाना जरूरी है। मैं चाहूँगा कि ज्यादा से ज्यादा भारतीय छात्र जापानी भाषा सीखें। हमारे माध्यमिक विद्यालयों में जापानी को एक वैकल्पिक भाषा के रूप में पहले ही शामिल किया जा चुका है। कल, प्रधानमंत्री आबे और मैं भावी पहल में निवेश का शुभारंभ करेंगे और हमें आशा है कि हमारे हजारों युवा अगले पांच वर्षों में जापानी भाषा सीखेंगे।

परस्पर हित का एक दूसरा क्षेत्र ऊर्जा सुरक्षा है। हमारे पूरे क्षेत्र को ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा और ऊर्जा बाजार के कुशल संचालन के भरोसे की जरूरत है।

व्यापार और ऊर्जा प्रवाह को सुरक्षित बनाने के लिए समुद्री मार्गों के संरक्षण सहित रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने में दोनों देशों के बराबर हित जुड़े हैं।

जापान की तरह भारत भी अपनी ऊर्जा संबंधी बढ़ती जरूरतों को पूरा करने में परमाणु बिजली को स्वच्छ ऊर्जा का एक व्यावहारिक स्रोत मानता है। इसे संभव बनाने में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का अभिनव तथा आधुनिक नजरिया तैयार करने में हमें जापान के सहयोग की जरूरत है। साथ ही मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए कार्य करने के प्रति भारत दृढ प्रतिज्ञ है।

आतंकवाद हमारी शान्ति के लिए एक ऐसा आम खतरा है जो हमारे खुले समाज के ताने-बाने तथा सद्भाव के लिए गम्भीर खतरा बनता जा रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह एक जटिल समस्या है और इसके कई चेहरे, कई कारण हैं तथा यह किसी भी भौगोलिक बाधाओं को नहीं मानता है। जब तक हम मिलकर काम नहीं करेंगे, तब तक हम आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष में जीत हासिल नहीं कर पाएंगे।

मुझे इस बात की काफी खुशी है कि भारत और जापान संयुक्त राष्ट्र और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार तथा इसे फिर से सक्षम बनाने व इसे मौजूदा समय के अनुरूप बनाने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ और इसके विभिन अंगों को ज्यादा प्रभावी बनाने में दोनों देशों के हित जुड़े हैं। आज जिस युग में हम रह रहे हैं, उसमें दुनिया के देश बड़ी तेजी से परस्पर जुड़ते जा रहे हैं। ऐसे हालातों मे राष्ट्रों की एक दूसरे पर निर्भरता के व्यवस्थित तथा एकसमान प्रबंध के लिए हमें परस्पर सहयोग को और मजबूत बनान होगा।

एशिया के सबसे बड़े और सबसे ज्यादा विकसित लोकतंत्रों के रूप में एक दूसरे की प्रगति और समृद्धि में हमारे हित निहित हैं। हम भारत में निवेश के अनुकूल आर्थिक माहौल उपलब्ध कराने के प्रति कटिबद्ध हैं। मैं जापानी कम्पनियों को भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ाने का निमंत्रण देता हूँ। प्रधानमंत्री आबे और मैं वार्ताएं शुरू करेंगे, जिनसे व्यापक आर्थिक साझीदारी समझौते का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी के प्रवाह को प्रोत्साहन मिलेगा।

मेरा दृढ़ता से यह मानना है कि हमारी साझीदारी में पूरे एशिया में लाभ और समृद्धि का प्रकाश फैलाने तथा एक एशियाई आर्थिक समुदाय के निर्माण की नींव रखने की क्षमता है।

दोनों देशों के बीच सभी स्तरों पर आदान-प्रदान बढ़ाने से ही भारत और जापान के बीच व्यापक साझीदारी की इन आशाओं और अपेक्षाओं को पूरा किया जा सकता है। हमने एक उच्च स्तरीय ऊर्जा संवाद कायम करने पर सहमति जताई है, लेकिन ऐसे मंच केवल व्यापार और उद्योग में ही नहीं बल्कि और कई क्षेत्रों में भी स्थापित किए जाने चाहिए।

महामहिम, देवियो और सज्जनो,

किसी भी सामरिक भागीदारी में दोनों देशों के लोगों के बीच दोस्ताना संबंध आधार स्तम्भ का काम करते हैं। मुझे जापान के युवाओं में ओडोरी महाराजा की लोकप्रियता की बात सुनकर खुशी हुई है। हमारे बच्चे भी आपका नाचने वाला रोबोट, ओडोरी आसिमो को देखकर काफी खुश होते हैं। मुझे विश्वास है कि जापान में भारतीय रेस्तरांओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सुशी और टैम्पूरा भी भारत में इतने ही लोकप्रिय हो रहे हैं।

वर्ष 2007 भारत-जापान मित्रता और भारत जापान पर्यटन आदान-प्रदान का वर्ष है। हमें यह भी आशा है कि दोनों देशों के बीच वायु सम्पर्क और बढ़ेगा। मैं युवा और वृद्ध जापानियों को भारत यात्रा का निमंत्रण देता हूँ और उनसे आग्रह करता हूँ कि वे प्राचीन और आधुनिक भारत की भव्यता का अपनी आँखों से अवलोकन करें।

भारत और जापान के बीच नई साझीदारी के विचार को आज गति मिली है। मैं इस विचार को एक ठोस स्वरूप प्रदान करने के लिए यहां आया हूँ, ताकि दोनों देशों की भावी पीढियां 21वीं शताब्दी को एशियाई शताब्दी बनाने के हमारे प्रयासों को धन्यवाद दे सकें।

******